हनियां
विवेक मिश्र

परिचय-विवेक मिश्र

15 अगस्त 1970 में उत्तर प्रदेश के झांसी शहर में जन्म। विज्ञान में स्नातक, दन्त स्वास्थ विज्ञान में विशेष शिक्षा, पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नात्कोत्तर। दो कहानी संग्रह-'हनियाँ तथा अन्य कहानियाँ' एवं 'पार उतरना धीरे से' प्रकाशित। तीसरा कहानी संग्रह- 'ऐ गंगा तुम बहती हो क्यूँ?' शीध्र प्रकाश्य। लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं व कहानियाँ प्रकाशित। कुछ कहानियाँ संपादित संग्रहों व स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में शामिल। साठ से अधिक वृत्तचित्रों की संकल्पना एवं पटकथा लेखन। 'light through a labyrinth' शीर्षक से कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद राईटर्स वर्कशाप, कलकत्ता से तथा कहानिओं का बंगला अनुवाद डाना पब्लिकेशन, कलकत्ता से प्रकाशित।

संपर्क- 123-सी, पाकेट-सी, मयूर विहार फेज़-2, दिल्ली-91

मो;-9810853128

ईमेल;- vivek_space@yahoo.com

रामदेही पांडे बुंदेलखण्ड की कंकरीली माटी पर नंगे पाँव बढ़ती जा रही थी और मन में मंतर जैसा कुछ बुदबुदा रही थी। साथ में अपने बालों में सरसों का तेल लगाए, धूप में चमकती, साँवली औरतें कुछ गाती, कुछ रिरियाती, रामदेही के पीछे पहाड़ी पर बनी मड़िया की ओर बढ़ रही थीं। उनके साथ में बच्चे, तेंदू पत्तों के गुच्छे तोड़कर, उन्हें हथियार बना, आपस में लड़ते, खेलते-कूदते जा रहे थे। बच्चों के लिए उत्सव, औरतों के लिए परम्परा, रामदेही के लिए मन्नत और उसके पति विश्वजीत पांडे दरोगा के लिए व्यर्थ की कसरत था, आज का यह आयोजन। झाँसी-कानपुर रोड पर, झाँसी से बीस मील दूर, मेन रोड से कच्ची सड़क पर उतरकर, घने तेंदू पत्तों के बीच से जाती, पगडण्डी पर; पाँच-छ: मील पैदल चलने पर मिलता है पालर गाँव, ठेठ देहात।

आज भी यहाँ मनौती माँगकर, किसी पहाड़ी पर बनी सत्ती माता की मड़िया पर जाकर पूजा करना, प्रसाद चढ़ाना, लौटकर इक्कीस, इक्यावन सुहागिनों को भोजन कराना आम है, पर उस दिन खास था, विश्वजीत पांडे, दरोगा का उसमें शामिल होना। झाँसी जनपद की तहसील मौठ में तैनात थे, विश्वजीत पांडे। थे तो वह इंस्पेक्टर, पर दरोगा उनके नाम का हिस्सा बन गया था। उनकी बहादुरी के किस्से दूर-दूर तक सुनाए जाते थे। रेलगाड़ी से, दिल्ली से ग्वालियर जाते हुए, धौलपुर से ग्वालियर तक, रेलमार्ग के दोनों ओर, बड़ी-बड़ी दीमक की बाम्बियों-सी फैली है, चंबल की घाटी। कालान्तर में, मिट्टी के कटने से बने उतार-चढ़ावों से बना यह बीहड़, किसी तिलिस्म से कम नहीं है। यह फैला है धौलपुर, भिंड, मुरैना, कालपी और कुछ हद तक कानपुर देहात तक और इसी में शरण पाते हैं खूँख़ार डकैत। सैंकड़ों वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले इस इलाक़े में, जिसमें बुंदेलखण्डी बोली जाती है, यहाँ डकैतों का इतिहास सदियों पुराना है, पर डाकुओं पर बनी फ़िल्मों की तरह यहाँ घोड़े नहीं दौड़ते, बल्कि इन बीहड़ों में शरण लेने वाले डकैत पैदल ही, दिनभर में, दर्जनों मील का सफ़र तय करते हैं। इन मिट्टी के फिसलन भरे टीलों के बीच कोई सवारी नहीं चल पाती, ऊँचे टीलों के बीच से गुज़रते संकरे रास्तों पर इन्सान भी चौपायों की तरह घुटनों पर ही निकल सकता है, इस इलाक़े का दुर्गम होना ही इसे डकैतों के छुपने का स्थान बना देता है। जहाँ चार हाथ की दूरी पर खड़े आदमी को देख पाना भी सम्भव नहीं होता। ख़ैर यहाँ बात थी विश्वजीत पांडे की, इन्हीं बीहड़ों में छुपे कई डकैतों को, बड़ी-बड़ी गैंगों के सरगनाओं को धर दबोचा था, विश्वजीत पांडे ने। कई बार छपी थीं उनकी तस्वीरें मनोहर कहानियाँ, सच्ची कहानियाँ और अपराध कथा जैसी पत्रिकाओं में, डकैतों के शवों के सिरहाने खड़े हुए, अपनी रायफ़ल के साथ। मर्दाना शक्ती से लबालब, कई गाँवों को डकैतों से अभयदान देने वाले विश्वजीत पाण्डे जैसे प्रतापी पुरुष के जीवन में एक ही दुख था। वह सन्तानहीन थे। विश्वजीत और रामदेही को विवाह के ग्यारह साल बाद भी कोई सन्तान नहीं थी। शरीर से स्वस्थ, हल्के भूरे-गोरे रंग